चौधरी PHOTOSTAT

"I don't love studying. I hate studying. I like learning. Learning is beautiful."

"An investment in knowledge pays the best interest."

Hi, My Name is

नागरिक सास्त्र

IAS

(क) 'भारतीय समाज का परिचय'

(क) भारतीय विद्या (G.S. Ghurye)

Exclusive विज्ञान society की study के लिये SOCIOLOGY
IR के बाद
1 2 3
Pos/Con/Fun
purpose solve करना।
लेकिन राष्ट्रवादी भा. यी. पुराणों समाजशास्त्री करते हैं।

चूंकि समाजशास्त्र की उत्पत्ति Europe में हुयी तथा इसके पीछे पुनर्जागरण, औ. क्रान्ति, फ्रांसीसी क्रान्ति आदि महत्वपूर्ण कारक थे इसलिये समाजशास्त्र के अध्ययन के जो दृष्टिकोण विकसित हुये वह भी यूरोपीय समाज तथा इसकी परिस्थितियों के परिणाम थे। इसमें प्रत्यक्षवाद, संघर्षवाद तथा प्रकार्यवाद प्रमुख थे।

औपनिवेशिक काल में भा. समाज तथा संस्कृति के प्रति रुचि यूरोपीय बुद्धिजीवियों/ नृवैज्ञानिकों/ मानवशास्त्रियों/ समाजशास्त्रियों में जगी। उन्होने भा. समाज का अध्ययन भी यूरोपीय समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण यथा प्रत्यक्षवाद/ प्रकार्यवाद/ संघर्षवाद आदि से किया।

परन्तु भा. समाज एवं संस्कृति यूरोपीय समाज से भिन्न तथा विशिष्ट थी फलस्वरूप यूरोपीय दृष्टिकोण से भा. समाज के अध्ययन में कई समस्यायें आ रही थी।

ऐसे में कुछ यूरोपीय विद्वानों ने यह महसूस किया कि भा. समाज चूंकि यूरोपीय समाज से भिन्न है इसलिये भा. समाज को भा. दृष्टिकोण या नजरिये से देखना चाहिये। इस चिन्तन के परिणामस्वरूप जो शास्त्र विकसित हुआ उसे 'भारतशास्त्र' 'Indology' कहते हैं।

Scanned by CamScanner

6

संरचनात्मक प्रकार्यवाद = (M.N. Srinivas)

संरचना - विभिन्न इकाइयों का एक निश्चित क्रम जिसका कोई उद्देश्य होता है।

प्रकार्य - जो भी अस्तित्व में है, उसकी समाज में कोई न कोई योगदान होती है।

(काम होना चाहिए, अब कैसे भी हो।)

(काम होना चाहिए एक particular unit द्वारा ही)

संरचनात्मक प्रकार्यवाद से तात्पर्य उस दृष्टिकोण से है जो विभिन्न संरचनाओं की इकाईयों के समग्र योगदान एवं सामाजिक स्थिरता एवं निरन्तरता को बनाये रखने में उनकी भूमिका का अध्ययन करता है।

(मैलीनॉस्की, मानवशास्त्री, प्रकार्यवादी, (इंसान ने सबकुछ बनाया है।) व्यक्तिवादी प्रकार्यवादी)

1. विवाह जरूरी है। < Bio, Psycho = संरचनात्मक प्रकार्यवादी

2. कैसे भी विवाह वाली need पूरी हों < Bio, Psycho = प्रकार्यवादी

॥ परिश्रम ही सफलता की कुंजी है ॥
चौधरी PHOTOSTAT
JIA SARAI, NEW DELHI-16
Mob. No. 9818900565

Scanned by CamScanner

संरचनात्मक प्रकार्यवाद मूलतः एक सा० मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण है। यह वाद मुख्यतः छोटे तथा स्थिर या अपरिवर्तनशील समाजों के अध्ययन के लिये प्रयुक्त होता है। यह वाद मुख्य रूप से किसी भी सा०-सांस्कृतिक इकाई का अध्ययन उसके स्वतन्त्र विशेषता या चरित्र के रूप में नहीं करता बल्कि पूरे समाज के स्थायित्व एवं निरन्तरता में उसका क्या योगदान है, को समझने के आलोक में करता है।

भा० समाज का प्रारम्भिक अध्ययन यूरोपियन मानवशास्त्रियों तथा नृवेत्ताशास्त्री (ethnographer) किया करते थे। यूरोपियन दृष्टिकोण में सबसे बड़ी समस्या यह थी कि वह भारतीय समाज का अध्ययन या चित्रण करने के स्थान पर भारत की विशिष्ट सा०-सांस्कृतिक इकाईयों का अध्ययन करते थे जैसे Herbert Risley की 'The Races In India', Louis Dumont की Homo Hierarchicus, William Wiser – The Hindu Jajmani System etc.

इन अध्ययनों की एक सबसे बड़ी यह सीमा है कि इनसे भा० प्रजातियों / जातिव्यवस्था या जजमानी व्यवस्था के बारे में समस्त जानकारी उपलब्ध हो जाती हैं परन्तु इनसे यह स्पष्ट नहीं होता कि भारतीय समाज की संरचना क्या है तथा यह विशिष्ट इकाईयाँ किस प्रकार भा० समाज के

स्थिरता एवं निरन्तरता में अपना योगदान देती है।

M.N. Shriniwas ने इस कमी को पहचाना तथा समाज के समग्र अध्ययन पर बल दिया।

M.N. Shriniwas ने Europe के संरचनात्मक प्रकार्यवादी दृष्टिकोण तथा प्रसरणवादी दृष्टिकोण को अपनाया और इसी दृष्टिकोण से उन्होंने कई अध्ययन किये। जिनमें उनकी २ प्रमुख कृतियाँ 'भारत के गाँव' तथा 'Coorgs of Mysore' प्रमुख है।

M.N. Shriniwas के अनुसार निश्चित रूप से भा० समाज विशिष्ट या unique है परन्तु चाहे समाज कितना भी विशिष्ट हो परन्तु यदि उसके अध्ययन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाया जाए तो उससे सभी समाजों का अध्ययन हो जाता है।

अपने Rampura के अध्ययन में उन्होंने इसी दृष्टिकोण को अपनाया तथा पूरे गाँव के सभी सम्भावित पक्षों जैसे विवाह, परिवार, नातेदारी, जाति व्यवस्था, राजनीतिक व्यवस्था, सांस्कृतिक व्यवस्था, पर्व-त्यौहार आदि का अध्ययन किया और किस प्रकार ये संस्थाएँ तथा संस्कृतियाँ Rampura को स्थायित्व तथा निरन्तरता प्रदान करती है को स्पष्ट करने का प्रयास किया।

उन्होंने मुख्य संरचनात्मक प्रकार्यवादी दृष्टिकोण अपनाने के स्थान पर विसरण वादी दृष्टिकोण को भी अपनाया क्योंकि भा० समाज सदैव से बाहरी प्रभाव के लिये खुला रहा है।

इन्होंने विशेषकर British शासन के 150 वर्षों के प्रभाव को भी भा० समाज पर देखा तथा स्पष्ट किया कि इसका प्रभाव पूरे समाज तथा उसकी संस्थाओं को कैसे कैसे, किन-किन चरणों से परिवर्तित करता है।

इन्होंने, विसरणवादी दृष्टिकोण के अन्तर्गत Rampura पर पाश्चिमीकरण के प्रभाव का अध्ययन किया + यह स्पष्ट किया कि पश्चिमी प्रभाव से कैसे रामपुरा में परम्पराओं, राजनैतिक व्यवस्था, संस्कृति, शिक्षा, धर्म आदि में परिवर्तन आए।

M.N. Srinivas ने अपने संरचनात्मक प्रकार्यवादी दृष्टिकोण से ही प्रभुजाति, संस्कृतिकरण, धर्मनिरपेक्षीकरण आदि में प्रभाव स्पष्ट किया तथा अपने इस दृष्टिकोण से ही भा० ग्राम के समग्र चित्रण करने का जो प्रयास किया वह भा० समाजशास्त्र के विकास में अभूतपूर्व है।

भा० समाज के अध्ययन में संरचनात्मक प्रकार्यवादी दृष्टिकोण की कई सीमाएं हैं ▷

Scanned by CamScanner

(1) अगर weber के आदर्श प्रारूप पद्धति को देखा जाए तो यह मानते हैं कि किसी भी विज्ञान में ऐसा दृष्टिकोण नहीं बना है या बनाया जा सकता है जो किसी घटना के समस्त पक्षों का पूर्ण अध्ययन कर सके। इसलिये weber छोटे अध्ययनों पर बल देते हैं जो Sriniwas की शैली में दिखायी नहीं देता।

(2) भा० ग्राम कोई (पृथक इकाई) Single Unit नहीं है। भा० ग्राम कई गाँव से जुड़े होते हैं। इनमें उनका चित्रण उनके आसपास के क्षेत्र को उपेक्षित करके नहीं किया जा सकता। M.N. Sriniwas ऐसा करने की जो कोशिश करते हैं वह भा० ग्राम का त्रुटिपूर्ण चित्रण है।

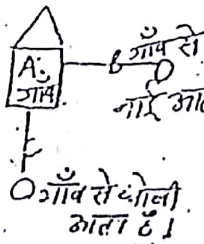

(*)

(3) M.N. Sriniwas के विचार में कई अस्पष्टताएँ हैं जैसे संस्कृतिकरण को प्रारम्भ में ब्राह्मणीकरण कहना, प्रजाति की अवधारणा में ब्राह्मण के परम्पराओं पर अधिक बल देना। पाश्चिमीकरण के प्रभाव में मात्र Britain के प्रभाव को लेना। कई ऐसे अध्ययन हैं जो इनके

अध्ययन की वैधता को चुनौती देते है।

M.N. Sriniwas ने जिस प्रकार ग्रा० समाज के अध्ययन के लिये संरचनात्मक प्रकार्यवादी दृष्टिकोण विकसित किया। उसने ग्रा० समाज के अध्ययन की दशा तथा दिशा सुनिश्चित कर दी। इससे पूर्व अब तक ग्रा० समाज के अध्ययन के लिये विशिष्टवादी परम्परा प्रचलित थी। जिसको न सिर्फ उन्होने तोड़ा बल्कि अपने अध्ययन से भविष्य के लिये एक सफल परम्परा भी विकसित की। निश्चित रूप से संरचनात्मक प्रकार्यवादी दृष्टिकोण बदलते समाज को समझने तथा उसकी गति को पकड़ने में चूक जाने की सम्भावना होती है और इसे समझते हुये श्रीनिवास ने प्रकार्यवादी दृष्टिकोण के महत्व को स्वीकारा।

भारतीय समाज को समझने के लिये ग्रा० गाँवो के अध्ययन की जो परम्परा प्रचलित हुयी वह आज भी जारी है। आगे चलकर Andre Beiteille Yogendra Singh, K.L. Sharma जैसे अनेक प्रमुख समाजशास्त्रीयों ने ग्रामीण अध्ययनों पर बल दिया जो M.N. Sriniwas के दृष्टिकोण की पुष्टि है। इन्ही नवीन चिन्तन के कारण ग्रा० समाजशास्त्रियों में M.N. ~~Sriniwas~~ का नाम स्वीकारा है।